गुरु नानक – सबद ४०

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भांडा भाउ अमृतु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सार: साहित्यिक उपकरणों के माध्यम से आवश्यक जानकारी हासिल करने के लिए प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व एक बहुमुखी और प्रभावी उपकरण है। किसी भी रचना में इस विधि का उपयोग जटिल विचारों को किसी संबंध से जोड़ कर आसानी से समझने के योग्य बनाते हैं। इस सबद में, प्रतीकवाद को प्रस्तुत करने और वैचारिक संदेश को बेहतर ढंग से समझने के लिए परिचित तरीक़ों का उपयोग किया गया है।

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
लचीलेपन को ढलाई भट्टी और धैर्य को सुनार के रूप में आत्मसात करें।

अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
मन को धातु पर हथौड़े मारने वाली निहाई और आध्यात्मिक शास्त्र को हथीआर की तरह उपयोग करें।

भउ खला अगनि तप ताउ ॥
निर्भयता को धौंकनी और ध्यान को आग की तपिश की तरह स्थापित करें।

भांडा भाउ अमृतु तितु ढालि ॥
भक्ति के अमृत को धारण करने के लिए स्वयं को एक पात्र के रूप में ढालें।

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
आलोचनात्मक विचारों को ज्ञान से ढालें, ताकि शुद्ध इरादों की टकसाल बन सके।

जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
जिनके पास नेकी पर केन्द्रित काम करने की दृष्टि है।

नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥
नानक कहते हैं कि ऐसे दूरदर्शी को संतोष की दृष्टि की कृपा मिलती है। (३८)

तत्त्व: गुरु नानक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चिंतन और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं, जो परोपकारी गुणों को प्रोत्साहित कर सकता है और किसी के व्यक्तित्व को संतुष्टि का प्रतीक बना सकता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com